ISSN 2278-8808 IMPACT FACTOR: 1.38
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

''नरेश मेहता के कथा साहित्य में समाज जीवन''

प्रा.गायकवाड हनुमंत येदू
न्यु आर्टस्, कॉमर्स ॲण्ड सायन्स कॉलेज, पारनेर, ता.पारनेर, जि.अहमदनगर हिंदी विभाग

व्यक्ती विविधता में ही एकता बनाकर समाज में अपना अस्तित्व स्थापित करता है । हर युग में समाज में परिवर्तन लाता है । और परिवर्तन संसार का नियम है । साहित्यकार नरेश मेहता के अपने कथा साहित्य में समाज जीवन का दर्शन कराया है । उसके 'यह पथ बंधु था,' 'धुमकेतू : एक श्रुति', 'नदी यशस्वी' है 'उत्तर कथा' इन उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक और भौगोलिक परिवेश का सजीव चित्रण देखने को मिलता है ।

संस्कृती प्रिय समाज :

संस्कृती में प्रथाओं, उत्सवों का समावेश किया जाता है । भारतीय संस्कृती में नवरात्र, दशहरा, दिपावली, होली आदि उत्सव बड़ी धुमधाम से मनाये जाते हैं। इस व्यवस्था में जो लोग सामुहिक धार्मिक अनुमानों में श्रध्दा रखते आए हैं। 'धुमकेतु : एक श्रुति' इस उपन्यास में उदयन के घर में कुलदेवी का पूजन होता है। सवेरे–सवेरे जल्दी उठकर पुरुष खाना बनाते हैं और सूर्योदय से पहले पुजन करके वे खाते हैं । इस उपन्यास में मुहर्रत के त्यौहार का वर्णन होता है। उत्सवों के माध्यम से समाज में अनेक धर्म जाति के लोग कुछ स्थानों पर एक होकर सामुहिक उत्सव करते हैं। 'प्रथम फाल्गुन' उपन्यास में मोहिंद्रनाथ अपनी बेटी का जन्मदिन हर साल मनाते हैं। उस दिन पंडित से पाठपूजन करके बेटी को आशीर्वाद दिया जाता है और सामूहिक भोजन किया जाता है । 'उत्तर कथा' उपन्यास में भारतीय समाज धार्मिक रिती–रिवाजों में जुड़ा रहा है । इस उपन्यास में समाज अपने–अपने धर्म के देवी–देवताओं का हमेशा पूजन करता है । पंडित महादेव शुक्ल अपनी पिता की मृत्यू के पश्चात श्राध्द के दिनों में उज्जैन के सारे साधू–महात्माओं, ब्रम्हचारियों, भिखारियों को भोजन, वस्त्र देते हैं । उपन्यास में मनुष्य–मनुष्य में आत्मीयता देखने को मिलती है । भारतीय संस्कृती का चित्रण देखने को मिलण है, लेखक लिखते है 'उपर खिडकी से जब वासुदेव ने झॉका तो दोनों को ही आश्चर्य हुआ । वह लपक कर नीचे आया और चरण्य स्पर्श किया ।'' [1] परिवार के रिश्तो–नातों में भी संस्कृति की झलक दिखाई देवी है । इसमें रक्षा–बंधन, वनरात्री उत्सव, श्राध्द का अनुष्ठान जैसे अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक समाज का चित्रण हुआ है । 'वह पथ बंधु था' उपन्यास में लेखक लिखते हैं ''इतिहास सफल करों तथा महापुरुषों का होता है, जब की हमारे स्मृतियों मे ऐसे अनेक साधारण जन होते है जो व्याप्ती भी नहीं

बन पाते केवल संख्या होते हैं। लेकिन हम जानते हैं की यह असफल सामान्य जन इतिहास न हो महापुरुष न हो, किंतु मनुष्य होते हैं ।''[2]

स्थानीय विशेषता :

नरेश मेहता ने अपने कथा साहित्य में स्थानीय विशेषण का चित्रण किया है । 'डूबते मस्तूल' उपन्यास में स्थानीय विशेषता को महत्त्व देते हुए उत्तर भारत के त्योहार एवं वहॉ के स्थानिक विशेषताओं का चित्रण हुआ है । स्वामीनाथन अपने मित्र पूरी से मिलने कानपूर से लखनऊ आता है । तब स्वामीनाथन लखनऊ के त्यौहार एवं वहॉ के मौसम की विशेषता को प्रकट करता है । लेखक कहते है ''23 मार्च 1951 लखनऊ के सारबाग रेल्वे स्टेशन पर अभी उत्तरा दूँ ..... आज होली है इसलिए ट्रेन में ज्यादा भीड़ नही थी, लोग बाग फुटेवाउे तक खड़े खड़े आते रहैं ।'' [3] उत्तर भारत के लोगों में एक होली' के प्रसंग का चित्रण किया है । जिसका संबंध देश के संस्कृति से रहा है ।

नरेश मेहता ने 'यह पथ बंधु था' इस उपन्यास में मालवा समाज की स्थानीय विशेषता प्रस्तुत हुई है । इस उपन्यास में उज्जैन इंदौर का प्रमुख रुप से चित्रण हुआ है । इन शहरों में अलग–अलग प्रांतों के लोग रहते हैं। महाराष्ट्र, बंगाल, मालवा, काशी, बनारस इन स्थानों से आकर मालवा में रहनेवाले पात्र स्थानीय विशेषता के रुप में दिखाई देते हैं । डॉ. शंकर वसंत मुदगल लिखते है। ''महाराष्ट्र के प्रतिनिधी पात्र के रुप में बालासाहब दिघे और वामनराव है । ..... मालवा समाज की प्रतिनिधी स्त्रियों के रुप में रत्ना, इंदू और मालती का चरित्र अत्यंत सफल बन पड़ा है । बनारस के प्रतिनिधी पात्र के रुप में शिवनाथ त्रिपाठी और धोती और कुर्ता पहने, चंदन का टीका लगाऍ, गेहुऍ वर्ण, पतली मूँछ के ब्राम्हण शास्त्री का चरित्र प्रभावशाली बन पड़ा है । काशी के जीवन को चित्रित करनेवाले सकलदीप नारायण सिह, पुस्तक विक्रेता गजाधर और मुनीम केशव बाबू है । बंगाली समाज का परिचय करानेवाले क्रांतिकारी सुधांशुराय, रत्ना और उसकी मॉ आदि प्रस्तुत है ।''[4] 'धुमकेतु : एक श्रुति' उपन्यास में मालवा में कई महाराष्ट्रीयन परिवार रहते हैं । उन परिवारों की रहन–सहन तथ उत्सव चित्रण उपन्यास में हुआ है । महाराष्ट्र के लोगों का प्रधान पर्व गणेशत्सव रहा है। उदयन गणेशोत्सव के बारे में बनाता है'' गणपति अपनी समस्त राजसी शोभा के साथ अणस्ॅधमय असत है... बनाता है रोज रात को किर्तन–भजन / मराठी महिलाऍ अनेक त्योहारों में सहभाग लेती है ।'' [5]

देश प्रेमी समाज :

नरेश मेहता के कथा साहित्य में कुछ ऐसे धाग है जिसमें देश प्रेम की भावना कुट–कुट कर भरी है । 'डूबते मस्तूल' इस उपन्यास में भारत के विभाजन के पूर्व के वातावरण का चित्रण हुआ है । रंजना लाहोर में रहनेवाली है । वहॉ अकलंक एक क्रांतिकारी होने के कारण रंजना से कम ही मिल पाता है । वह अंग्रेजों के खिलाफ काम करता रहता है । रंजना अपने प्रेमी अकलंक को यह सब छोडने के लिए कहती है । तब अकलंक कहता है । ''रंजना ! तुम मेरे लिए बहुत कुछ हो किंतु राजनीति से पृथक होने का अर्थ जानती हो? राजनीति इसलिए है क्योंकी जीवन है । साधारण जन के लिए जीवन से अलग होने पर मौत होती है। मेरे लिए यही बात राजनीति के साथ समज सकती हो ।'' [6]

निष्कर्ष :

नरेश मेहता के कथा साहित्य में समाज जीवन है । इसका विवेचन उपरोक्त उपन्यासों में किया है । जैसे 'यह पथ बंधु था' और 'उत्तर कथा', 'नदी यशस्वी है', 'धुमकेतु : एक श्रुति' आदि उपन्यासाहें में समाज जीवन का चित्रण दिखाई देता है । 'यह पथ बंधु था' और 'उत्तर कथा' इन उपन्यासों में मालवा तथा उसके आस–पास के स्थानों का चित्रण मिलता है । मालवा की भूमी, नदियॉ आदि का चित्रण तथा उसकी ऐतिहासिक पृष्टभूमी सजीव रुप से अंकित हुई है ।

प्रस्तुत कथा साहित्य में संस्कृति प्रिय समाज जीवन को प्रस्तुत किया है । 'धुमकेतु : एक श्रुति' एवं 'नदी यशस्वी है' इन दो खंडो में गणेशोत्सव एवं मोहरम आदि कई त्योहारों का चित्रण हैं । मोहरम में हिंदू–मुसलमान दोनों समाज आपस में मिलजूलकर दिखाई देते हैं । 'प्रथम फाल्गुन' उपन्यास में गोवा के जन्मदिन का चित्रण है । भारतीय संस्कृति से जुड़े प्रतिनिधी पात्रों का चित्रण इन रचनाओं मे प्रस्तुत हुआ है । नरेश मेहता ने अपनी रचनाओं में जीवनानुभुति के साथ यथार्थ के चित्रण को महत्त्व दिया है । विवेचन क्या साहित्य में व्यक्ति जीवन तथा समाज जीवन प्रस्तुत हुआ है । साथ ही संयुक्त परिवार, और एकल परिवार का चित्रण भी हुआ है । अपनी रचनाओं के माध्यम से मनुष्य को मनुष्य के प्रति आत्मीयता का महत्त्व अधोरेखित हुआ है । पंडित शिवशंकर, दुर्गा, गोविंद, उदयन, पारुल, चारुलता आदि पात्र जीवन संघर्ष करते हुए मानवीय मर्यादाओं से जखड़े हुए हैं । इन पात्रों से नरेश मेहता ने समाज को सामाजिक बोध एवं नई दिशाएॅ देने का सफल प्रयास किया है ।

संदर्भ :

1) नरेश मेहता – प्रथम फाल्गुन पृ. 206
2) नरेश मेहता – 'यह पथ बंधु था' पृ. 41
3) नरेश मेहता – 'डूबते मस्तूल', पृ. 13
4) नरेश मेहता – 'यह पथ बंधू था', पृ. 237
5) डॉ.एच.जी.साळुंखे – हिंदी के मार्क्सवादी उपन्यासों की नचिकाएॅ पृ. 47
6) नरेश मेहता – 'डूबते मस्तूल', पृ. 122